सारांश :-

मैत्रेयी पुष्पा प्रतिभा सम्पन्न उपन्यासकार है। इनके उपन्यासों में नारी विमर्शा तथा प्रकृति विमर्शा की दिशा में महत्वपूर्ण आयाम खोल देते हैं। स्त्री मन की मैत्रेयी २१ वी सदी की प्रमुख उनन्यासकारों में एक है। 'फरिश्ते निकले' उनका ११ वां उपन्यास है। उपन्यास एक ऐसी विधा है, जो लेखक की पहचान बनाती है। उपन्यासों के द्वारा ही मैत्रेयी पुष्पा पहचाना जाती है। फरिश्ते निकले २५१ पृष्ठों की इस उपन्यास में अनेक उपकहानीयों को समाया गया है। यह एक सजीव कथा है। कल्पना कम यथार्थ अधिक है। स्वाधीनता पूर्व भारत के देहाती जीवन पध्दति का दर्शन और वहाँ के छोटे छोटे कारिगारों का जीवन परिचय किया गया है।

फरिश्ते निकले: ग्रामीण भारत की दर्शन

विजयकुमार जी परूतें[1] , विजयालक्ष्मी कोसगीं[2]

[1]सह प्राध्यापक , श्रीमती वीरम्मा गंगसिरी महिला महाविद्यालय, गुलबर्गा .
[2]संशोधन मार्गदर्शक, गुलबर्गा.

इस जुर्म पर बेला पकडी जाती है। उसे जेल में रहना पडता है। वहाँ पर फूलनदेवी को देखती है। उनको देखकर और उसकी मन हिम्मत से दुगना हो जाती है। बेला ने जेल में फूलनदेवी से मिलती है तो वह उनसे कहती है कि "चलो, हमारे रास्ते पर तमाम खतरे उठाते हुई औरते चली तो आ रही है। औरतों ने मर्दो को अपने हौसलों की कूवत और ताकत की बानगी तो दिखा ही दी, भले उनका रास्ता जंगल से होता हुआ जेल पर आकर गुजरे (पृ.सं. ८७) फूलनदेवी आगे बडकर औरतों को एक संदेश देती है। "मर्दो के पीछे दौडना छोडो औरतों, उनको अपने स्वाभिमान और सम्मान के पीछे दौडाओ। तुम मर्दो से ज्यादा योग्य हो क्योंकि जद्दो जहद के साथ हमदर्दी की मालकिन हो। मगर अपना गुस्सा पीने के लिए नहीं उगलने के लिए बचाकर रखो। औरत के गुस्से की आग में मर्दो के गरूर और मालिकाना संस्कार भस्म हो जाएँगे।" (पृ.सं. ८७)

बेला को जेल से छुडाने के लिए बालसखा वकील बलवीर आकर जेल में बेला से मिलकर घटना की विवरण लेकर किसी हालत में उन्हें चुडाने का भरोसा देता है। कोर्ट में केस लडकर बेला को जेल से रिहा कर देता है। वहाँ से निकलने के बाद बेला के सामने प्रश्न खडा होता है कि वह कहाँ जाए घर और गाँव जाने से लोग क्या कहेंगे। वह वहाँ जाने के लिए मना करती है। आखीर वह बलबीर का दोस्त अजयसिंह के यहाँ रहना चाहती है।

जहाँ पर बेलाबहु आश्रय लेती है, वह अजय सिंह नाम का किसान का बेटा रहा था। उसके जीवन में बेला के जैसे कई बुरी घटनाएँ घटी थी। त बवह एक समर्पण करनेवाला डकैत बन जाता है। बेलाबहु यहाँ आकर लेखिका से इस घर की हर आदमी की कहानी दर्ज कराना चाहती है। अजयसिंह और उनके साथी लोग अन्याय की दुनिया को बदलना चाहते थे।

अजयसिंह चाहता था कि "यह ऐसा जगह है जो अमीरों के खिलाफ गरिबों के द्वारा और गरिबों के लिए लडी जाती है।" अजयसिंह मुसिबतों में गरीबों को धन की सहायता किया करता था, ऐसे ही मौके पर जुझारसिंह को भी सहायता किया है। इनके सभी साथी अजयसिंह से एक न एक मौके पर मदद पाकर उनके व्यक्तित्व से आकर्षित हो गये थे। इसलिए उनके साथ ही समाज सेवा में रहा करते थे। जब अजयसिंह का ब्याह होने वाला था, डाकु मलखन के बातों को मानकर ब्याह तिरस्कृत कर घर से निकल पडता है।

अजयसिंह का व्यक्तिव ही ऐसा था, किसी को भी मदद किया करता था। उनके व्यक्तित्व से आकर्षित होनेवालों में लिल्ली भी एक थी। लिल्ली घर छोडकर भाग कर आई थी। उन्हें घर में पिता शादी करना चाहता था, मग रवह इनकार कर भागकर जंगल आ जाती है। वहाँ अजयसिंह से मिलकर उसके कामों में सहायक बनती है। "सरदार, यहाँ मैं किसी को मारने नहीं आई, हथियार चलाकर बचाने आई हूँ। अगर बचाते–बचाते मैं मारी जाऊँ, मैं खुद को शहीद समझूँगी। अपनी इच्छा से जी रही हूँ, अपनी इच्छा से मरना चाहूँगी" (पृ.सं. १२४) लिल्ली अजयसिंह का छाया बन कर मरते दम तक रहती है। मालिक का रक्षा करना अपना कर्तव्य समझती है।

इस उपन्यास में बेला बहु की कहानी के बाद लुहरिन उजाला नाम की सुन्दर लडकी की कहानी बडी रोचक लगती है। उजाला के पिता रामरतन लोहे के सामान बनाने का काम के साथ साथ बैल खरीदना और बेचने का काम किया करता था। उजाला पिता के काम में सहायता बनी रहती है। उसी गाँव का सरपंच का बेटा वीर शिक्षा मित्र बनकर उजाला को पढाने आया करता था। जब उजाला दो चोटियाँ बनाकर घाघर पहनकर रहती थी। वीर और उजाला के बीच प्रेमांकुरित होने लगता है। जब कभी नदी के तट पर वीर शिक्षामित्र आकर बसने लगता है, उजाला भी अपनी बैलों को पानी पिलाने के लिए आती रहती है। दोनों वहाँ देर तक बैठकर बाते करते थे। दोनों का प्यार घरवालों को पता चलता है। दोनों को समझाते है। जब वे समझ न पाते हैं तो वीर के पिता ने उजाला को खतम् करने के लिए उपाय करता है। एक दिन गाँव के लोगों ने मिलकर उजाला रामदेवरा देवता की दर्शन करने के लिए बस में सवार करते हैं। राह के बीच में ढाबे के पास बस रूकता है सभी खान, पान करने के बाद निकल पडते है। मगर उस बस से निकलने में उजाला वंचित होती है। उसी समय एक सुमो (वेहिकल) वाले ने उसे मनाकर ले जाते हैं। निर्जन घाठी में उसे अत्याचार और मारपीट कर के भाग निकलते हैं। "वीर की मोहबत, उजाला की सजा! तभी तो चार–पाँच दरिन्दे भेज दिए वीर की बाप ने लडकी की देह की चीर फाड करें। जबतक उसमें बिफरने का दम रहे, घसीटते रहें।" (पृ.सं. १९३) यह सब वीर के पिता ने गुंडों के द्वारा कराता है। उजाला अदमरी बेहोश में पडी रही थी, तब बेलाबहु ने ही उजाला को शुश्रुता करके अजयसिंह के यहाँ ले आती है।

उजाला केवल वीर से प्रेम ही नहीं पिता से मिलकर लुहार की काम भी करती है। वह बापू के लिए दोपहर तक धन चलाकर तपता हुआ लोहापीटती, चिमटा कल छी, खुरपी, फाउड और हसिया बना करती थी। घरेलु उपयोगी वस्तु बनाकर प्रतिदिन गाँव में बेचने के लिए जाया करती है।

आधुनिकता और वैज्ञानिक प्रगति की वजह से लोहापिटाओं का काम, विनाश की ओर जाने लगा था। घर में गैस का उपयोग करने से फकनी, चमच, चुल्हा, और चिमटा आदि वस्तुओं का उपयोग बन्द हुआ था। गाँव में ट्राक्टर आने से मजदूर तबह हो गया था। उजाला इस संदर्भ में रामप्यारी काकी से कहती है। "अम्मा हमारी हैसियत हमारी हाथ है, जमाना बदल रहा है तो हमारा हुनार भी बदलेगा। ट्रैक्टर–फरेक्टर भी तो आसमान से नही टपके, बनाए तो किसी आदमी ने ही है। मशीन हर हालत में अम्मा आदमी की मोहताज रहनी है।" (पृ.सं. १४९)

उपन्यास के अंत में अजयसिंह, बेलाबहु, जुझारसिंह, बसन्ती उजाला और गुलाब आदि मिलकर पहाडपुर गाँव में रहने लगते है। वीर और सिरोधन उँटारा दोनों मिलकर उजाला को ढूँढते हुए इनके ढेरे तक आ पहुँचते हैं। वे दोनों घटित अतीत प्रसंगो की जानकारी देते हैं।

***प्रस्तावना* :-**

'फरिश्ते निकले' मैत्रेयी पुष्पा की यह नया उपन्यास है। जिसमे उन्होंने बेलाबहु की जीवन वृत्तान्त की रचना किया गया है। उसके साथ साथ उनके जीवन में जो घटनाएँ घटती है और जिन व्यक्तियों ने उनके जीवन में आते है, उनके साथ बेलाबहु की वाद–विवाद–संवाद होता है, उनका चित्रण को दर्शाया गया है।

बेलाबहु से जब भी लेखिका की भेंट होती है तो तब बेला जिक्रकरती है कि उनकी कहानी भी किताबों में आजाय, लोग उनकी जीवन गाथा को पढे और समझ सके। मैत्रेयीपुष्पा से बेलाबहु कहती है कि जीवन क्या है? "बिन्नू। कोई आदमी जहाँ–जहाँ या थोडा मोडा नही होता। वह जब होता है तो अपने गुन–अवगुणों के साथ पूरा पूरा होता है, इतनी बात हम जानते है तो तुम भी अवश्य जनती होंगी" (पृ.सं. १३) इस उपन्यास लिखने में लेखिका को बेला की बाते पूरक बनती है।

बेलाबहु ने जीवन में कई बुरे अनुभव पाती है, मैत्रेयी पुष्पा से कहती है "बिन्नू हम जो कुछ भी समझे है, जिन्दगानी ने समझा ही दिया है" (पृ.स. १६) इस उपन्यास लिखने में लेखिका को बेला की बाते पूरक बनती है।

बेलाबहु की बचपन में ही पिता बानसिंह का मृत्यु होता है, घर में ११ वर्ष की बेला और माँ रहने लगे थे। घर चलाना मुश्किल बन जाती है। बेला की माँ खुद खेती करने लगती है। मुसिबत के समय दूर के रिश्तेदार बादलपुर का शुगरसिंह का आगमन होता है। वह हर तरह से बेला की माँ को मदद करते रहता है। विधुर शुगर सिंह के आगे पीछे भी कोई नहीं था। वह भी यहीं रहने लगता है। माँ शुगरसिंह की मदद से घर चलाने लगती है। कुछ दिनों के बाद लोग आपस में शुगर सिंह, माँ और बेला के बारे में बाते करने लगते हैं। शुगरसिंह के साथ बेला का विवाह होनेवाला है। इस से नाराज होकर जब बेला घर से भागना चाहती है। यह तो बाल विवाह था, अनमेल जोडी, अनमेल ब्याह को बेला नहीं चाहती है। मगर माँ दहेज देने में मजबूर रहती है। सब्जी–बीबी, शिवदेवी, रामदोई चाची की बहन शकुंतला और अन्य अनेकों के अनमेल विवाह को देखने से विवाह से इनकार करती है।

बलबीर नामक वकील बेला का बालसखा था। दोनों बचपन में साथ–साथ खेला करते थे। शुगरसिंह ने बेला के जीवन में न मानने पर भी प्रवेश करता है। बेला की ११ वर्ष की उम्र में शुगरसिंह से सगाई और १४ वी वर्ष में विवाह होता है। विवाह के चार साल के बाद भी सन्तान की कोई नामों निशान नहीं है। बेला का पति शुगरसिंह गुप्तरोग से पीडित था। मानसिक रूप में वे पति से जुजती रहती है। पति उसे बांझकहा करता था। तब बलवीर ने उपाय से नर्स को भिजवाकर बेलाकी जांच करने से खुद शुगरसिंह ही नपुंशक रहने का पता चलता है।

एकदिन पतिने बेला से "दूसरी ले आ ऊँगा, तब देखना अपनी दुर्गती" बेला कहती है – " ते हिजडा, खसिया, दूसरी तीसरी चौथी ले आ। तेरी ही मूँछे बारकर जाएगी। वे गाय, भैंस, घोडा, नही, औरतें होंगी। मेरी तरह की औरत जैसी औरतें" (पृ.सं. ३४) बेला ने अभिमान या नारी अस्मिता की बाते करती है।

शुगरसिंह के घर पाहुने बनकर भारतसिंह कभी कभी आया करता था। वहाँ बेला को देखकर आकर्षित होता है। पति नपुंसक रहता है बार बार अत्याचार करते रहता है। इन से बचने के लिए वह सोचते संदर्भ में भारतसिंह ने बेला की इलाज की बहना बनाकर उसे शुगरसिंह की इच्छा के अनुसार अपने हवेली ले चलता है। हवेली आने पर भारतसिंह बेला से दूर रहने लगता है, वह प्यार से वंचित होती है "प्यार की दौलत लुटानेवाले पाहुने यहाँ आकर एकदम कंगाल भारतसिंह कैसे हो गए?" (पृ.सं. ४६)

बेला का जीवन हिंडोले पर चढा था, तन शुगरसिंह के यहाँ तो मन भारतसिंह के आसपास शुगरसिंह का सन्तान मोह में बेला ने मानसिकता के फाल्स प्रेगनेन्सी (झूठी गर्भावस्था) होती है।

भारतसिंह की हवेली में भारतसिंह और उनके चार भाई थे। सभी एक ही हवेली में रहा करते थे। जोरावरसिंह नाम का भाई गाँव का प्रधान था। एक दिन वह जबरदस्ती से बोला पर अत्याचार करता है। खुद समर्पण करना एक बात है और कोई लूट ले जाए, इसकी टीस कलेजा फाडती है। "हमने अन्याय सहा क्यों कि प्यार चाहा था। प्यार कौन नहीं चाहता? पर प्यार की कीमत ज्यादा थी, बहुत ज्यादा" (पृ.सं. ६८) इस अत्याचार की फल से बेला गर्भवती बनती है। वे पाँचों भाई एक दिल के हैं। वे कभी मिलकर बेला की गर्भावस्था को मिटाना चाहते है। बडे घरों में छोटे लोगों की हैसियत क्या होती है, बेला का तनम न बता रहा था। बेला जानती है। हमारी गलती मोहबत थी। उसकी देह पर पाँचों कामातूर भाई बारी बारी से यौन शोषण किया करते थे। शुगरसिंह, जोरावरसिंह के साथ और तीन भाईयों के वीर्य में लिथडती उसकी देह–उज देह से गर्भ को निकालने ने के लिए उपाय से बेला को अस्पताल ले आते हैं।

बांझ कलंक से मुक्ति पाने के लिए बेला पति का घर छोडकर भारतसिंह के यहाँ चली आई। जहाँ उसकी सम्मान नहीं था, उसकी अस्मिता पर छोट लगने लगी तो वहाँ से निकलना चाहती है। मगर पाँचों भाइर यहाँ पर उन्हें एक वस्तु के रूप में देखने लगते है। जोरावर कहता है कि "तुम्हें जिसके पास भेजा जा रहा है, उनका खुश होना जरूरी है, समझी?"(पृ.सं. ८०)

बेला समझती है कि शुगरसिंह नपुंषक था लेकिन नफरत का पात्र नहीं था। वह घर–बार चाहता था, खूनी मैदानों में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। भारतसिंह और उनके भाईयों को अत्याचार को देखकर एक दिन पाँचों भाई एक ही कमरे में सोने का मौका देखकर बेलाने कट्टिया भर कैरोसिन का छिडकाव कर देती है। जब वे दिवानखाने में पाँचों भाई शायन और सपनों में डूबे हुए। "मैं द्रौपदी। इस युग की याज्ञसेनी" (पृ.सं. ८३) इस तरह लाक्षग्रह को जलाकर अन्याय का बदला लेती है।

जेल की सजा पाया अजयसिंह, फुलनदेवी का दूसरा अवतारी बेलाबहु, डाकू जुझारसिंह, घर से भागी हुई, बसन्ती, दलाल काम करनेवाली गुलाब और चोट खाई हुई उजाला सभी मिलकर समाज में बदलाव लाना चाहते हैं। अगली पीडी के लिए शान्ति और सुरक्षा बसाने के लिए केवल स्कूल खोलने का एक मात्र उपाय है। इसलिए बेलाबहु अपने जमीन तक बेचती है। अन्याय अत्याचार को रोकने के लिए कानून तोडने से नहीं मिटता है। लोगों में अन्याय के प्रति जानकारी लाने के लिए साक्षरता लाना अनिवार्य है। इसे लागु करने में अजयसिंह, बेलाबहु और उनके टोली ने फरिश्ते बनकर काम करते हैं। समाज इन्हें स्वीकारता भी है।

फरिश्ते निकले उपन्यास में बेलाबहु का जीवन प्रसंग के साथ उजाला का जीवन को भी चित्रित किया है। इन दोनों चरित्रों अलावा अन्य गौण पात्र भी पूरक बनकर कहानी रोचकता की मोड पाने में सहायक बनती है। इन उपन्यास में जीते–जागते इंसान तो है ही प्रकृति सौंदर्य भी है। अपनी सारी ऊर्जा और सौंदर्य के साथ इंसान और प्रकृति के कहानी मोड लेती है। नारी के साथ रेप, खूनी अन्याय, दोखादडी आदि के विरोध में आखीरकार पुरूष ही साथ देकर एक जूट होते है।

नारी चरित्र से संबंधित यह उपन्यास संघर्ष शील और जमीन से जुडा हुआ है। बेलाबहु और बलवीर, उजला और वीर का प्रेम प्रसंग को चित्रित करते हुए लेखिका ने देश की स्वाधिनता से लेकर देहली में घटी महिला अत्याचार तक को चित्रित किया है। यह एक प्रेम कथा है। बाल विवाह, बेमेल विवाह, नारी शोषण आदि प्रसंगों का चित्रण भी है।

इस उपन्यास की भाषा सहज और पठनीय योग्य है। राजस्थान और आस पास के जमीन से जुडे रहने से वहाँ की शब्दों का प्रयोग किया है। संदर्भ के अनुसार प्रकृति और घटनाओं का चित्रण करने में वर्णनात्मक शैली को अपनाया है। यह एक सफल और श्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।